अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान (वर्ष : 2022) दिनांक : 17.08.2022

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

लघु दण्डक–30

प्र. 1 कोई चार द्वार लिखें– 24

(क) तिर्यंच की अवगाहना लिखें।
(ख) प्राण द्वार लिखें।
(ग) योगद्वार में सात काययोग से प्रारम्भ करते हुए अन्त तक लिखें।
(घ) उपयोग द्वार लिखें।
(ङ) ज्योतिष देवों की स्थिति लिखें।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) संहनन द्वार।
(ख) इन्द्रिय द्वार।
(ग) दृष्टि द्वार।
(घ) आहार द्वार।

पांच ज्ञान–30

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) अवधिज्ञान का विषय विस्तार से लिखें।
(ख) अवधिज्ञान और मनःपर्यव ज्ञान का अन्तर लिखें।
(ग) संज्ञीश्रुत और असंज्ञीश्रुत के प्रकारों को सविस्तार लिखें।
(घ) श्रुतनिश्रित मतिज्ञान के प्रकारों को व्याख्यायित करते हुए मल्लक दृष्टान्त के द्वारा स्पष्ट करें।
(ङ) केवलज्ञान की परिभाषा लिखते हुए उसके विषय को स्पष्ट करें।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें– 6

(क) मतिज्ञान के कितने भेद हैं?
(ख) गमिक श्रुत किसे कहते हैं?
(ग) औत्पत्तिकी बुद्धि किसे कहते हैं?
(घ) सिद्ध केवलज्ञान के कितने प्रकार हैं? नाम लिखें।
(ङ) मनःपर्यव ज्ञान अप्रमत्त के होता है–यहां अप्रमत्त से क्या तात्पर्य है?
(च) क्या वर्तमान काल अवधिज्ञान का विषय बनता है? स्पष्ट करें।
(छ) प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते हैं?
(ज) अन्तगत अवधिज्ञान के कितने प्रकार हैं? नाम लिखें।

गीतिका–गुणस्थान दिग्दर्शन–10

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 2

(क) नौवें गुणस्थान में वेद को क्षीण करने का क्रम लिखें।

(ख) देशमोहनीय का उपशम निष्पन्न भाव कौन से गुणस्थान तक होता है?

(ग) शाश्वत गुणस्थान कितने एवं कौन-कौन से हैं?

प्र. 6 किन्हीं दो पद्य भावार्थ सहित लिखें– 8

(क) संपराय में.....पेखो रे।

(ख) मोहकर्म.....नांही रे।

(ग) प्रथम समय.....मिलावै रे।

(घ) कषाय.....देखो रे।

पूर्व कण्ठस्थ ज्ञान–30

प्र. 7 निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) पच्चीस बोल–छठा बोल ***अथवा*** आश्रव के बीस भेद। 3

(ख) चतुर्भंगी–ग्यारहवां बोल ***अथवा*** पन्द्रहवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–सातवां बोल ***अथवा*** बीसवां बोल। 3

(घ) तत्त्वचर्चा–सावद्य पर चर्चा ***अथवा*** नौ तत्त्व पर चोर-साहूकार। 3

(ङ) जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड)–आत्मद्वार ***अथवा*** आश्रव तथा संवर के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और गुण क्या हैं? 3

(च) कर्म प्रकृति–अन्तराय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति ***अथवा*** दर्शन-मोह की प्रकृतियों का कार्य एवं स्थिति। 4

(छ) बावन बोल–उदय के तैंतीस बोलों में सावद्य कितने? निरवद्य कितने? ***अथवा*** अजीव के चौदह भेद ऊंचे, नीचे, तिरछे लोक में कितने-कितने? 4

(ज) इक्कीस द्वार–अनाहारक का बोल ***अथवा*** सामायिक संयति का बोल? 4

(झ) जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय एवं तृतीय खण्ड)–व्रताव्रत द्वार से चारित्र के पांच प्रकारों के बारे में ***अथवा*** सप्तभंगी का विवेचन करें। 3